

## "प्रतिबिम्ब"

Gaurav J. Pathania<sup>1</sup>

पैनी दृष्टि से देखो  
या आँखें फाड़कर  
फिर भी आसमान में सिर्फ दो ही तरह के बादल दिखाई देते हैं  
एक:  
हाथी की तरह विशालकाय लेकिन टुकड़ों में बँटे  
आसमान के कोने में दुबके हुए से, छितरे हुए से काले बादल  
दूसरे:  
शेर, बत्तख, चूहे, चिड़िया, गाए और बंदर जैसी आकृति वाले  
रुई जैसे मुलायम, पूरे आसमान में फैले हुए सफ़ेद बादल !

.....पृथ्वी पर जब भी हाहाकार मचती है  
तो सफ़ेद बादल हवा से घबराकर कहीं दूर भाग जाते हैं  
पर एन मौके पर, हजारों टुकड़े मिलकर बने "काले बादल"  
फुर्ती से भागते हुए, गरजते हुए, पानी से लबालब  
खूब जमकर बरसते हैं  
और प्यासी धरती को एक लम्बे समय के लिए तृप्त कर देते हैं।

... पर पृथ्वी पर रहने वालों को  
न जाने क्यों  
तृप्ति के बाद  
आसमान में सिर्फ सफ़ेद बादल देखना ही अच्छा लगता है  
और अनंत आसमान के कोने कोने में फिर से सफ़ेद बादल छा जाता है  
काला बादल न जाने कहाँ छुपा दिया जाता है  
जब मैं आसमान में उस काले बादल को खोजने की कोशिश करता हूँ  
तो सफ़ेद बादलों की आँख-मिचोली में मुझे खोटा सा लगता है  
फिर मुझे पूरा आसमान पृथ्वी का ही "प्रतिबिम्ब" सा लगता है।

Below is the English translation:

<sup>1</sup>Center for Justice and Peacebuilding, Eastern Mennonite University, Harrisonburg, Virginia  
E-mail: jogjnu@gmail.com

## “Reflection”

You may see  
With piercing eyes  
Or give a cursory look  
That spread of sky  
Holds two types of clouds  
Ones are huge  
Elephant-like, fragmented framed  
In corners obscure  
Others are small  
Acquiring myriad shapes  
Sparrows, rabbits, cows and ducks  
Cottony-soft in sheety-space  
When the earth cries and clamours  
White clouds shake and shatter.

While the black ones  
Drench the ground  
With satiating showers  
As the earth settles  
After the quenched thirst  
The white clouds gather  
Their privileged feathers  
The Black clouds hide  
In their invisible hyde  
Up they see and say  
How beautiful the sky is laid  
With cosmetic decoratives  
No one sees those  
Who dared to deliver  
Who volunteered to do  
How come they remain unappreciated  
And their authentic acts go unnoticed?

Translation:

The poem was originally written in Hindi in 2003. The author is grateful to Dr. Meenu Bhaskar, and Dr. Kalyani K. (JNU) for the English translation.